Bihar Board Class 8 Hindi Notes Chapter 20 झाँसी की रानी

झाँसी की रानी

कविता का सारांश सन् 1857 में स्वाधीनता संग्राम की रूपरेखा देख ब्रिटिश सरकार घबड़ा गई । भारतीय राजवंशों ने भी इस संग्राम में अपना क्रोध प्रदर्शन किया। मानो पुनः बूढ़े भारत में फिर से नई जवानी आ गई हो । लोगों में आजादी पाने की ललक जगी। लोग अंग्रेज सरकार को भगाने का निर्णय कर लिया था।

लक्ष्मीबाई झाँसी की रानी थी। वह कानपुर के नाना साहब की बहन थी। उसे बरछी, ढाल, कृपाण और तलवारबाजी का बड़ा शौक था तथा शिवाजी के वीर गाथाओं को प्रायः गाती रहती थी। ।

लक्ष्मीबाई मानो दुर्गा की अवतार थी। मराठे भी उसके तलवारबाजी से चकित थे। नकली युद्ध, व्यूह की रचना, उसको तोड़ना, सेना को घेरना, दुर्ग तोड़ना इत्यादि खेल को ही वह प्रायः खेलती थी। शिकार से उसे बड़ा प्रेम

था। – लक्ष्मीबाई का विवाह वीरता वैभवयुक्त झाँसी के महाराजा के साथ हुआ । लेकिन अल्प समय में राजा साहब निःसंतान मर गये।

अंग्रेज ने अपने हड़प-नीति का प्रयोग कर झाँसी में अपनी फौज
भेजकर अंग्रेजी झंडा फहरा दिया । दिल्ली, लखनऊ, उदयपुर, तंजौर,
सतारा, कर्नाटक, सिन्ध, पंजाब बंगाल, मद्रास आदि सम्पूर्ण भारत में
क्रांति की आग जलने लगी।

लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी हुकूमत का विरोध किया। अंग्रेज ने लक्ष्मीबाई को दबाने के लिए लेफ्टिनेंट बॉकर को भेजा । लेकिन बॉकर को मैदान छोड़कर भागना पड़ा।

रानी झाँसी को पुनः अपने अधिकार में लेने के बाद कालपी की ओर बढ़ी, जो झाँसी से सौ मील दूर है। लक्ष्मीबाई का घोड़ा थक चुका था, वह मर भी गया। यमुना नदी के किनारे कालपी में अंग्रेजी सेना को फिर हार खानी पड़ी। अब लक्ष्मीबाई कालपी को अंग्रेजी से मुक्त कराकर ग्वालियर की ओर बढ़ चली।

ग्वालियर से भी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को मार भगाया । अंग्रेजों से मित्रता रखनेवाले सिन्धिया ने भी लक्ष्मीबाई के डर से राजधानी छोड़ भागा ।

सब जगह लक्ष्मीबाई की विजय से घबड़ाकर अंग्रेज जेनरल स्मिथ ने अपनी सेना के साथ आ धमका । युद्ध में स्मिथ भी हार गया । इस युद्ध में लक्ष्मीबाई की सहेली काना और मुंदरा ने भी अपना युद्ध कौशल दिखाई थी।

स्मिथ के हार के बाद यूरोज अपनी सेना लेकर रानी को घेर लिया।
भयंकर युद्ध हुआ। रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी सेना को तहस-नहस
करते यद्ध क्षेत्र से निकल गई थी। आगे नाला पार करने के दौरान
लक्ष्मीबाई का नया घोड़ा अकड़कर अड़ गया । इतने में ही रानी पर बहुत सैनिकों ने वार करना प्रारम्भ कर दिया । रानी घायल होकर गिर गई और वीरंगति को प्राप्त हो गई। उस समय उनकी उम्र मात्र 23 वर्ष की थी।

https://www.evidyarthi.in/

स्वतंत्रता संग्राम का पथ प्रशस्त करनेवाली प्रथम नायिका लक्ष्मीबाई का गुनगान आज भी बुंदेलखण्ड के वासी बड़े चाव से गाते हैं।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/